CHETANA
International Journal of Education

Impact Factor
SJIF=5.689

Peer Reviewed/
Refereed Journal

ISSN-Print-2231-3613
Online-2455-8729

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

Received on 25th Jan. 2021, Revised on 8th Feb. 2021, Accepted 12th Mar. 2021

आलेख

ऑनलाइन शिक्षा : वर्तमान में शिक्षा का उभरता स्वरूप

* डॉ. सुनीता मुर्डिया
एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षा संकाय
जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ
(डीम्ड–टू–बी) विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान
Email: sonumurdia@gmail.com, Mo. 9829030058

बीज शब्द – *संचित ज्ञान का संरक्षण, बाह्य जगत, सामाजिक प्रक्रिया आदि।*

सार संक्षेप

शिक्षा एक सौद्देश्य, गतिशील एवं सामाजिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास किया जाता है, जिससे वह बाह्य जगत के साथ समन्वय स्थापित कर सके। शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है जो सामाजिक वातावरण में पूर्णता प्राप्त करती है। समस्त बन्धनों से मुक्त करना, पीढ़ी दर पीढ़ी संचित ज्ञान का संरक्षण, हस्तान्तरण एवं परिमार्जन करना, जीवन जीने हेतु आवश्यक ज्ञान एवं कौशलों का अर्जन करना आदि शिक्षा के मुख्य उद्देश्य रहे हैं। उपरोक्त उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु प्रत्येक समाज अपने बालकों की शिक्षा हेतु उपयुक्त अधिगम वातावरण निर्मित करता है। वर्तमान समय में ऑन लाईन शिक्षा व्यवस्था विद्यार्थियों के अधिगम में एक वरदान सिद्ध हो रही है।

प्रस्तावना

एडम्स का यह कथन सत्य ही है कि बालक अपने वातावरण द्वारा प्रभावित होता है तथा साथ ही वह वातावरण को प्रभावित भी करता है। वातावरण के बदलते स्वरूप के अनुरूप शिक्षा का स्वरूप भी समय–समय पर बदलता रहता है। शिक्षा शास्त्रियों के अनुसार शिक्षा के मुख्यतः निम्नलिखित स्वरूप दृष्टिगोचर होते हैं–

- **प्रत्यक्ष शिक्षा** : जैसा नाम से ही स्पष्ट है इस प्रकार की शिक्षा में शिक्षक एवं शिक्षार्थी का प्रत्यक्ष सम्बन्ध होता है। इसमें शिक्षक एवं साथी छात्रों के व्यक्तित्व का प्रभाव शिक्षार्थी पर पड़ता है।
- **अप्रत्यक्ष/दूरस्थ शिक्षा** : जनसंचार के साधनों के विकास के साथ ही शिक्षा को सर्व सुलभ बनाने के उद्देश्य से इस प्रकार की शिक्षा अस्तित्व में आई।
- **व्यक्तिगत शिक्षा** : शिक्षा मनोविज्ञान के सिद्धान्तों के अनुसार प्रत्येक बालक दूसरे बालक से भिन्नता लिए हुए होता है। अतः शिक्षा का आयोजन भी बालक की व्यक्तिगत विभिन्नताओं के अनुरूप होना ही व्यक्तिगत शिक्षा है। बड़े पैमाने पर शिक्षा का यह रूप अव्यावहारिक सा प्रतीत होता है।

- **सामूहिक शिक्षा :** जब एक साथ बहुत से व्यक्तियों को शिक्षा दी जाती है तो उसे सामूहिक शिक्षा कहा जाता है। वर्तमान समय में शिक्षा का यही रूप सर्वाधिक प्रचलन में है।
- **संकुचित शिक्षा :** जब शिक्षा विद्यालय तथा विश्वविद्यालय तक सीमित रहती है तो शिक्षा का वह रूप संकुचित शिक्षा कहलाता है।
- **व्यापक शिक्षा :** जीवन पर्यन्त चलने वाली शिक्षा इसके अन्तर्गत आती है। नाम के अनुरूप इस प्रकार की शिक्षा का क्षेत्र बहुत व्यापक होता है।
- **औपचारिक शिक्षा :** औपचारिक शिक्षा निश्चित अवधि, निश्चित उद्देश्यों, निश्चित पाठ्यक्रम तथा आदर्शों के अनुरूप प्रदान की जाती है।
- **अनौपचारिक शिक्षा :** औपचारिक शिक्षा से विपरीत शिक्षा का यह रूप प्राकृतिक एवं आकस्मिक होता है।

समाज में शिक्षा के उपरोक्त स्वरूप हमें मिलेजुले रूप से दृष्टिगोचर होते रहे हैं लेकिन इन सभी रूपों में से जो रूप सबसे ज्यादा प्रचलित है वो है प्रत्यक्ष शिक्षा।

प्रत्यक्ष शिक्षा बालक को एक वयस्क की भूमिका निभाने के लिए सामाजीकृत करती है तथा उसे समाज का जिम्मेदार नागरिक बनने हेतु आवश्यक ज्ञान एवं कौशल अर्जन में सहायता करती है।

परन्तु वर्तमान समय में एक बहुत बड़ी चुनौती हम सभी के समक्ष खड़ी है वो है कोविड–19 । कोविड–19 महामारी के कारण न केवल भारत वरन् सम्पूर्ण विश्व में मुख्य रूप से अपनायी जाने वाली प्रत्यक्ष शिक्षा प्रणाली थम सी गयी है। भारत की स्थिति पर दृष्टिपात करे तो 22 मार्च को जनता कर्फ्यू एवं 24 मार्च को सम्पूर्ण देश में लॉकडाउन के पश्चात् बाधित हुई शिक्षण अधिगम प्रकिया को पुनः पटरी पर लाने हेतु विद्यालयों से लेकर महाविद्यालयों तक सभी ने शिक्षा के वैकल्पिक स्वरूप को तलाशना आरम्भ किया जिससे बालकों की शिक्षा भी निर्बाध रूप से चलती रहे और उन्हें संक्रमण का कोई खतरा भी न हो। इस तलाश में शिक्षा का जो स्वरूप भारतीय परिपेक्ष्य में उभर कर आया वो है ''ऑन लाइन शिक्षा''। इस प्रकार कोविड–19 के कारण हम अपनी प्रचलित परम्परागत शिक्षा प्रणाली के स्थान पर वर्चुअल शिक्षा प्रणाली की ओर अग्रसर हो गए। शिक्षा प्रणाली में आए इस अचानक परिवर्तन को आत्मसात करना एवं उस हेतु आवश्यक संसाधन जुटाना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। सदियों से प्रचलित शिक्षा प्रणाली से एकाएक एक नयी शिक्षा प्रणाली को अपनाना आज की महत्ती आवश्यकता बन गया है। आँकड़े बतातें है कि मात्र 24 फीसदी भारतीयों के पास ही स्मार्ट फोन है, 11 फीसदी परिवारों के पास ही कम्प्यूटर डिवाइस है एवं 24 फीसदी परिवारों के पास ही इण्टरनेट सुविधा है लेकिन इन सब के बावजूद भी सामाजिक दूरी बनाए रखने की अनिवार्यता के कारण हमारे पास ऑनलाईन शिक्षा को अपनाना ही एकमात्र विकल्प है।

वैसे तो अब से पहले भी विद्यार्थी ऑन लाइन माध्यमों का उपयोग सीखने में निरन्तर कर रहे थे लेकिन वह व्यवस्था सीखने की वैकल्पिक व्यवस्था थी जिसमें विद्यार्थी नियमित कक्षाओं के साथ–साथ अपने संशय को दूर करने या किसी बिन्दु पर अपनी समझ को गहरी करने के उद्देश्य से वाट्सएप, यू–ट्यूब, गूगल आदि का उपयोग करते हैं। परन्तु वर्तमान में कोरोना के कारण शिक्षा की यह वैकल्पिक व्यवस्था अब एक मात्र व्यवस्था बनकर रह गयी है। सर्वप्रथम हम इस बिन्दु पर चर्चा करते हैं कि ''ऑन लाइन शिक्षा'' है क्या ?

''ऑन लाईन शिक्षा'', शिक्षा का एक नवीन उभरता हुआ रूप है जहाँ विद्यार्थी इण्टरनेट के माध्यम से अपने फोन, लेपटॉप अथवा कम्प्यूटर का उपयोग करते हुए अपने ज्ञान का संवर्द्धन करते है। ''ऑन लाइन शिक्षा'' कम्प्यूटर आधारित प्रशिक्षण, वेब आधारित प्रशिक्षण, इण्टरनेट आधारित प्रशिक्षण, ऑनलाइन प्रशिक्षण, ई–लर्निंग, कम्प्यूटर एडेड दूरस्थ शिक्षा आदि रूपों में प्राप्त की जा सकती है। मुख्य रूप से ''ऑन लाइन शिक्षा'' में –

1. छात्र एवं अध्यापक एक ही समय पर इण्टरनेट से जुड़े रहते हैं एवं कक्षाओं का आयोजन होता है।

2. इण्टरनेट के माध्यम से अध्यापक एवं छात्र, छात्र-छात्रा में संवाद होता है।
3. छात्र अपनी सुविधानुसार अपलोड की गयी विषय-वस्तु का अध्ययन करता है।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि ''ऑन लाइन शिक्षा'' के अन्तर्गत इण्टरनेट के माध्यम से विद्यार्थी अपने शिक्षकों एवं शिक्षण सामग्री से जुड़े रहते हैं एवं शिक्षण सामग्री को आत्मसात करने हेतु यथा आवश्यक अपने शिक्षकों से मार्गदर्शन प्राप्त करते हैं। वर्तमान समय में ''ऑन लाइन शिक्षा'' का उपयोग आपदा को अवसर में बदलने हेतु निश्चय ही सम्पूर्ण शिक्षा जगत द्वारा किया जा रहा है। राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की वेबिनार एवं शिक्षाविदों की बैठके भी ''ऑन लाइन'' ही सम्पन्न हो रही है। ऑन लाइन शिक्षा एक सिक्के के दो पहलूओं के समान है जिसके कुछ लाभ भी कुछ सीमाएं भी हैं।

'ऑन लाइन शिक्षा' के लाभ

1. 'ऑन लाइन शिक्षा' ग्रहण करने हेतु विद्यार्थियों को कहीं जाना नहीं पड़ता है, इससे उनके समय, श्रम एवं धन की बचत होती है।
2. घर पर रहकर ही पढ़ाई करने के कारण विद्यार्थियों को अपेक्षाकृत कम थकान महसूस होती है।
3. विद्यार्थी अपनी सुविधानुसार पढ़ाई कर सकते हैं।
4. कोई बिन्दु समझ में नहीं आने पर वह उन्हीं बिन्दुओं को दुबारा देखकर समझ सकते हैं।
5. विद्यार्थियों को तुरन्त प्रतिपुष्टि मिल जाती है।
6. विद्यार्थी सूचना सम्प्रेषण तकनीकी का उपयोग करना सीखते हैं।
7. एक साथ बहुत से विद्यार्थियों को शिक्षा दिया जाना सम्भव हो जाता है।
8. तकनीकी संसाधनों की सहायता से शिक्षा ग्रहण करने के कारण विद्यार्थियों की इन संसाधनों के उपयोग के प्रति समझ बढ़ती है।
9. घर पर ही अध्ययन करने के कारण यातायात के साधनों के उपयोग में बहुत कमी आई है। इनके कम उपयोग के कारण वातावरण प्रदूषण रहित हो गया है।
10. 'ऑन लाइन शिक्षा' के माध्यम से विद्यार्थी अपनी रूचियों के अनुरूप कौशल विकास हेतु अतिरिक्त पाठ्यक्रमों का भी अध्ययन कर सकते हैं।
11. विद्यार्थी अपने साथियों के साथ भेंट वार्ता एवं डिस्कशन बोर्ड के माध्यम से किसी बिन्दु पर चर्चा-परिचर्चा कर सकते हैं।
12. इस प्रकार की शिक्षा सभी प्रकार के अधिगम व्यवहार वाले बालकों हेतु उपयुक्त है। वे उनकी प्राथमिकता के अनुरूप दृश्य, श्रव्य या गतिकी माध्यम को अपना सकते हैं।
13. ऑन लाइन शिक्षा के माध्यम से छात्र न केवल भारत के वरन् विदेशी विश्वविद्यालयों से जुड़कर उनकी रूचि के अनुरूप अध्ययन कर सकते हैं।

'ऑन लाइन शिक्षा' की कमियाँ

1. 'ऑन लाइन शिक्षा' से विद्यार्थियों का सामाजिक विकास सम्भव नहीं।
2. 'ऑन लाइन शिक्षा' से बच्चों को मानसिक थकान हो जाती है तथा उन्हें रिफ्रेश होने का अवसर बहुत कम मिलता है।
3. यह केवल साधन सम्पन्न बच्चों के लिए उपयुक्त है।
4. इस प्रकार की शिक्षा व्यवस्था में कई तकनीकी अवरोध आते हैं।
5. 'ऑन लाइन शिक्षा' कभी वास्तविक कक्षा-कक्ष का स्थान नहीं ले पाती है।
6. 'ऑन लाइन शिक्षा' के कारण विद्यार्थियों का स्क्रीन टाइम बढ़ने से आँखों पर इसका नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

7. माता–पिता 'जो हमेशा अपने बच्चों को फोन से दूर रहने की सलाह देते थे अब, 'ऑन लाइन क्लासेस' के कारण स्वयं बच्चों के हाथ में फोन थमा रहे हैं।
8. 'ऑन लाइन' कक्षाओं में अध्यापक के साथ अन्तः क्रिया करने हेतु समुचित अवसर उपलब्ध नहीं हो पाते हैं। एक साथ चेट बॉक्स में कई टिप्पणियाँ होने के कारण कभी–कभी अध्यापक सभी संवादों को पढ़ नहीं सकते हैं।
9. कई बार विद्यार्थी सिर्फ उपस्थिति दर्शाने हेतु इन कक्षाओं को ज्वाइन करता है लेकिन वास्तव में सुनते नहीं हैं।
10. 'ऑन लाइन' कक्षाओं के सुचारू संचालन हेतु मौजूदा डिजिटल प्लेटफार्म एवं आई.सी.टी. आधारित उपकरण अपर्याप्त है। अतः वर्तमान एवं भावी चुनौतियों का सामना करने हेतु इनमें विस्तार अपेक्षित है। इलेक्ट्रोनिक उपकरणों को समय–समय पर रिचार्ज करना भी एक समस्या है।
11. 'ऑन लाइन' परीक्षाओं का आयोजन एक दुष्कर कार्य है।
12. कुछ पाठ्यक्रमों यथा चिकित्सा, इंजीनियरिंग आदि से सम्बन्धित प्रायोगिक एवं व्यावहारिक ज्ञान छात्रों को प्रदान करना अनिवार्य होता है जबकि 'ऑन लाइन' कक्षाओं के माध्यम से यह सम्भव नहीं होता है।
13. 'ऑन लाइन शिक्षा' को भावात्मक, गतिविधि आधारित एवं अनुभावात्मक शिक्षा के साथ मिश्रित नहीं किया जा सकता।
14. इसमें परस्पर मानवीय संवाद की संभावना कम होने के कारण विद्यार्थियों में अलगाव की भावना उत्पन्न करती है।
15. यह शिक्षा सामाजिक गुणों के विकास एवं छात्रों को निराशा एवं अवसाद से बाहर निकालने में कारगर नहीं है।
16. 'ऑन लाइन शिक्षा' एवं परीक्षा में अनैतिक प्रथाओं का प्रचलन भी इसका बहुत बड़ा दोष है।
17. छोटी उम्र में इण्टरनेट फ्रेण्डली होने में कारण वे अपराध एवं अश्लीलता से सम्बन्धित सामग्री की ओर भी रूख कर सकते हैं।
18. इस प्रकार की शिक्षा व्यवस्था से कई शिक्षक बेरोजगार हो सकते हैं।
19. अधिकांश 'ई–लर्निंग' संसाधन अंग्रेजी माध्यम में होने के कारण हिन्दी भाषी छात्रों के लिए यह एक बड़ी रूकावट है।
20. इस प्रकार से शिक्षा ग्रहण करने में विद्यार्थी वास्तविक कक्षा की अपेक्षा कम समय तक ही ध्यान केन्द्रित कर सकता है।
21. खर्चीली होने के कारण गरीब, पिछड़े वर्ग एवं लड़कियों की शिक्षा पर नकारात्मक प्रभाव पड़ने की सम्भावना है।
22. बच्चों के जीवन को पूर्णता प्रदान करने में खेल, संस्कृति एवं कला का महत्वपूर्ण स्थान है लेकिन 'ऑन लाइन शिक्षा' में ये वंचित रह जाते हैं।

'ऑन लाइन शिक्षा' के सुचारू संचालन हेतु सुझाव

1. 'ऑन लाइन' कक्षाओं के सुचारू संचालन हेतु शिक्षकों का प्रशिक्षण अनिवार्य है। हमारे शिक्षक पारंपरिक कक्षाओं हेतु निपुण हैं लेकिन वर्तमान चुनौतियों का सामना करने हेतु उन्हें प्रशिक्षित करना अनिवार्य है।
2. सरकार एवं विभिन्न ऐजेन्सियों द्वारा मुफ्त में उपलब्ध 'ऑन लाइन शिक्षण सामग्री' तक सभी की आसान पहुँच हेतु प्रयास किए जाने अपेक्षित है।
3. 'ऑन लाइन शिक्षा' के सुचारू संचालन हेतु समाज में व्याप्त डिजिटल अन्तर को समाप्त किया जाना अपरिहार्य है।
4. 'ऑन लाइन' परीक्षाएं आयोजित करना भी एक चुर्नातीपूर्ण कार्य है। इसमें पूछे जाने वाले प्रश्न ज्ञानोपयोग से सम्बन्धित होने चाहिए जिससे इस प्रकार की परीक्षा में व्याप्त अनैतिक प्रथाओं को समाप्त किया जा सके।
5. 'ऑन लाइन शिक्षा' को अनुभवात्मक एवं गतिविधि आधारित शिक्षा के साथ मिश्रित किया जाना आवश्यक ही नहीं अपरिहार्य है।
6. 'ऑन लाइन शिक्षा' के माध्यम से बालक के ज्ञानात्मक, भावनात्मक एवं क्रियात्मक तीनों ही पक्षों का विकास होना आवश्यक है।

7. वर्तमान में प्रचलित 'ऑन लाइन शिक्षा' से सम्बन्धित शोध कार्य किया जाना चाहिए जिसमें अभिधारकों के अभिमतों के आधार पर इसके स्वरूप में अपेक्षित परिवर्तन किए जा सके।
8. मौजूदा ई–लर्निंग प्लेटफार्म का विस्तार किया जाना चाहिए।
9. ई–लर्निंग सामग्री सभी भाषाओं में उपलब्ध होनी चाहिए जिससे आसानी से सभी उनका उपयोग कर सके।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि वर्तमान समय में ऑन लाईन शिक्षा व्यवस्था विद्यार्थियों के अधिगम में एक वरदान सिद्ध हो रही है। ऑन लाइन शिक्षा के कुछ लाभ एवं कुछ हानियां होने के बावजूद भी शिक्षा व्यवस्था से जुड़े सभी अभिधारक अपने–अपने स्तर पर प्रयास कर शिक्षा को सुव्यवस्थित एवं रूचिकर बनाने का प्रयास कर रहे हैं। अब विद्यार्थियों को नियमित कक्षाओं के साथ बहुत से रचनात्मक कार्यों एवं प्रोजेक्ट से जोड़कर उन्हें कुछ नवीन कार्य करने का अवसर प्रदान किया जा रहा है। ऑन लाइन कक्षाओं की भाँति ऑन लाइन कक्षाओं में विद्यार्थियों को ग्रह कार्य भी दिया जा रहा है, उनकी शंकाओं का समाधान भी किया जा रहा है, विभिन्न पर्वों एवं जयन्तियों का आयोजन किया जा रहा है तथा प्रेक्टिकल विषयों को समझने में भी मदद की जा रही है। इस प्रकार ऑन लाइन शिक्षा वर्तमान में एक बेहतर विकल्प के रूप में शिक्षा जगत को समृद्ध कर रही है।

सन्दर्भ साहित्य

1. www.mastree.com/
2. https://www.indiaeducation.net
3. https://www.encyclopedia.com
4. https://elearningindustry.com
5. https://www.educations.com
6. https://www.lyndia.com
7. https://www.online-educationnnet
8. https://www.ceaurora.edu
9. https://en.wikipedia.org/wiki/National_Education_Policy_2020

**** Corresponding Author***

डॉ. सुनीता मुर्डिया

एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षा संकाय

जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ

(डीम्ड–टू–बी) विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान

Email: sonumurdia@gmail.com, Mo. 9829030058